E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

"पूर्व पाषाण काल से मध्य ऐतिहासिक काल तक मानव गतिविधियों का केंद्र: भीमबेटका"

मनोज साँवले

शासकीय महाविद्यालय

उदयनगर, जिला देवास मध्य प्रदेश

Paper Rcevied date

05/09/2025

Paper date Publishing Date

10/09/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17725570

IMPACT FACTOR 5.924

सारांश

भीमबेटका भारत देश में मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन जिले में स्थित एक पुरातात्विक स्थल है यह स्थल रातापानी वन्य जीव अभ्यारण (वर्तमान 2024 में मध्य प्रदेश का आठवां टाइगर रिजर्व) में स्थित है। भीमबेटका शेलचित्रों एवं शैलाश्रय के लिए प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। जिसमें 600 शैलाश्रय हैं जो 275 शैलचित्रों द्वारा सुसज्जित है। यह स्थल पूर्व पाषाण काल से मध्य ऐतिहासिक काल तक मानव गतिविधियों का केंद्र रहा है। यहां शैलाश्रय के विषय मुख्यतः रेखांकित है। चित्रों में प्रयोग किए गए रंगों में मुख्यतः हर, गेरुआ, लाल एवं सफेद रंग है। यहां भौगोलिक दशाओं एवं ऐतिहासिक पक्षों को जानने का अवसर प्राप्त होता है। यहां गुफाओं की चित्रकला लगभग 30000 वर्ष पुरानी है।

यहां की गुफाएं व चित्रकला मनमोहक के साथ जिज्ञासा को बढ़ावा देने वाली है। यहां पाये जाने वाले चित्र भारतीय उपमहाद्वीप में मानव के सबसे प्राचीनतम साक्ष है, जो हजारों वर्ष पहले का जीवन दर्शाते हैं। यहां बने चित्र मुख्यतः नृत्य, संगीत, आखेट, घोड़े व हाथियों की सवारी, आभूषणों को सजाने तथा शहद जमा करने के बारे में है। इसके अलावा बाघ, सिंह, जंगली सूअर, हाथी, कुत्तों व घड़ियालों जैसे जानवरों का भी इन चित्रों में चित्रण किया गया है।

मुख्य शब्द:- पुरातत्व, ऐतिहासिक, स्थल,शैलाश्रय, शैलचित्र, प्रशिद्ध, पर्यटन, पाषाण काल, केंद्र, रंग, गुफाएं,जंगल।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

परिचय:-

भीमबेटका भारत के मध्य प्रदेश प्रांत के रायसेन जिले में (रातापानी वन्य जीव अभ्यारण में) स्थित एक पूरापाषाणिक आवासीय स्थल है। भीमबेटका मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के दक्षिण , मध्य प्रदेश की विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं में स्थित है। यह आदिमानव द्वारा बनाए गए शैलचित्रों और शैलाश्रयो के लिए प्रसिद्ध है इन चित्रों को पुरापाषाण काल से मध्य पाषाण काल के समय का माना जाता है। यह चित्र भारतीय उपमहाद्वीप में मानव के प्राचीनतम चिन्ह है।

भीमबेटका की खोज 1957-58 **में डॉ विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा की गई थी।इसमें** 243 **गुफाएं हैं। भीमबेटका रॉक शेल्टर में भारत की सबसे पुरानी ज्ञात रॉक कला है। साथ ही (यह स्थल) देखने में आने वाले सबसे बड़े प्रागैतिहासिक परिसरों में से एक है। इन शैलाश्रयो में** 500 **से अधिक शैलचित्र हैं। सन** 2003 **में यूनेस्को ने इन्हें अपनी विश्व विरासत धरोहर की सूची में सम्मिलित किया था। भीमबेटका गुफाओं में बनी चित्रकारियां यहां रहने वाले पाषाणकालीन मनुष्य के जीवन को दर्शाती है। भीमबेटका शैलचित्रों और शैलाश्रयो के लिए प्रसिद्ध है।**

सर्वाधिक प्राचीन चित्र लगभग 30000 **वर्ष पुराने अनुमानित किए गए हैं। यह चित्र गुफाओं के अंदर स्थित होने के कारण अभी बचे हुए हैं। इन गुफाओं की चित्रकारी है कि अन्यत्र चित्रों के ऊपर दूसरी चित्रकारी की गई है। इन गुफाओं में उत्तर-पाषाण काल,मध्य- पाषाणकाल, ताम्र-पाषाणकाल, प्रागेतिहासिक-काल और मध्यकाल मैं चित्रण किया गया या अधिकांश चित्रों का चित्रण मध्य पाषाणकाल में किया गया था।**

इन चित्रों में सामान्य रूप से प्रायः छड़ी जैसी मानव आकृतियों के माध्यम से प्रागैतिहासिक मानव की प्रतिदिन की गतिविधियों को प्रदर्शित किया गया है। चित्रों में कुछ प्रमुख पशुओं जैसे- हाथी, गैर (जंगली भैंसा) हिरण, मोर की आकृतियों का चित्रण किया गया है। इन चित्रों में शिकार के दृश्यो और युद्ध के दृश्यों को प्रदर्शित किया गया है।

चित्रों में मनुष्यों का धनुष-तीर, तलवार, भले और ढाल धारण किए हुए दिखाया गया है। कुछ चित्रकलाओं में सरल ज्यामिति अभिकल्पनाएं एवं प्रतीक भी हैं। चित्रकला के अन्य प्रमुख विषय-वस्तुएं नृत्य, संगीत

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

बजाना, पशुओं की लड़ाई और शहद एकत्र करना आदि है। खेल रहे बच्चे, खाना बना रही महिलाएं, सामूहिक नृत्य आदि के माध्यम से चित्रों में सामाजिक जीवन चित्रण किया गया है। चित्रों को रंग करने के लिए लाल, भगवा ,बैंगनी, बदामी, सफेद पीले और हरे रंगों का उपयोग किया गया हैं।

रंगों के निर्माण के लिए प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया गया है।उदाहरण के लिए हेमेटाइट अयस्क का उपयोग लाल रंग के निर्माण में के लिए किया जाता था।

भीमबेटका में दुनिया की सबसे पुराने पत्थर की दीवार और फर्श बने होने का प्रमाण मिलता है। यहां की एक चट्टान जिसे चिड़िया रॉक-चट्टान के रूप में भी जाना जाता है। इस चट्टान पर हिरण, बायसन, हाथी और बारहसिंगा को चित्रित किया गया है इसके अलावा एक अन्य चट्टान पर मोर, सांप, सूरज और हिरण की तस्वीर का चित्रण है। शिकार करने के दौरान शिकारी को तीर-धनुष, ढोल, रस्सी और एक सूअर के साथ भी चित्रित किया गया है। इस तरह की और भी कई चट्टाने और गुफाएं यहां विद्यमान है जिनकी मौजूदगी से हजारों साल पुराने कई रहस्यो का प्रमाण मिलता है।

भीमबेटका की गुफाएं आदिमानव द्वारा बनाए गए शैलचित्रों और शैलाश्रयो के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां बनाए गए चित्र भारतीय उपमहाद्वीप में मानव जीवन के सबसे प्राचीनतम चिन्ह है यहां पर अन्य पुरातात्विक अवशेष भी मिले हैं। जिसमे प्राचीन किले की दीवार, राग-गुप्तकालीन अभिलेख, लघु-स्तूप पाषाण काल में निर्मित भवन, और शंख के अभिलेख और परमार कालीन मंदिर के अवशेष सम्मिलित हैं।

अध्ययन क्षेत्र:-

उक्त शोध पत्र का अध्ययन क्षेत्र यूनेस्को की विश्व विरासत धरोहर की सूची में शामिल मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के दक्षिण में (46 किलोमीटर की दूरी पर) विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं में स्थित रायसेन जिले का एक विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक व भौगोलिक पर्यटन स्थल है। जो की 22°56'18"N से 29.938415° N अक्षांश / 77°36'47" E से 77°613085° E देशांतर पर स्थित है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

यह स्थान भोपाल बेतूल नागपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर होने से यहां आने जाने की उचित व्यवस्था मिल जाती है। निकटतम रेलवे स्टेशन भोपाल, साथ ही हवाई मार्ग के लिए भी निकटतम स्थान भोपाल ही है। राजधानी भोपाल के निकट होने से आवागमन के उचित साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो जाते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य:-

1- प्राचीन ऐतिहासिक शैलाश्रयो तथा प्राचीन गुफा के प्रति चिंतन करने की प्रवृत्ति का विकास करना।

2- प्राचीन भौगोलिक व ऐतिहासिक शैलाश्रयों की वास्तविक स्थिति को जानना।

3- उक्त स्थान पर पर्यटन का विश्लेषण करना (सुविधाओं एवं कमियों को जानना)।

4- उक्त स्थान पर पर्यटन में संभावनाओं, रोजगार के अवसर, राजकीय कोष में योगदान, आर्थिक विकास में सहायक, विदेशी मुद्रा का अर्जन, पर्यटन का विकास मॉडल आदि का विश्लेषण करना।

5- उक्त स्थान की विश्व प्रसिद्धि के बावजूद पर्यटन के क्षेत्र में पूर्ण विकास न होने के कारणों का विश्लेषण करना।

अध्ययन का महत्व:-

शोध कार्य करने में हम अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर नए विषयों के ज्ञान की ओर अग्रसर होते हैं।

उक्त शोध कार्य को करने से हमारा नए-नए विषयों (इस तरह के अन्य ऐतिहासिक/ भौगोलिक विषयों के प्रति) के प्रति चिंतन करने की प्रवृत्ति का विकास होगा। नए-नए तथ्यों के संग्रहण के लिए तरह-तरह की पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं और कई तरह की वेबसाइट को पढ़ने से हमारे अंदर शोध की दिशा में आगे बढ़ाने की रुचि विकसित होगी।

उक्त शोध कार्य से देश दुनिया में कई (अनछुये) इस तरह के अनछुये पहलुओं के प्रति अभिरुचि में वृद्धि निश्चित है, जिस कारण कई अन्य ऐतिहासिक / भौगोलिक स्थलों के विषय में नहीं-नई बातो/तथ्यों को जानने , समझने में सहायता होगी। जो की शोध के क्षेत्र में अभिनव प्रवृत्ति को जन्म दे सकेगी।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

आंकड़ों का संग्रहण (शोध प्रविधि):-

उक्त शोध पत्र को तैयार करने में प्राथमिक एवं द्वितीय समंको का (सहारा) उपयोग किया गया है। प्राथमिक समंकों के अंतर्गत भीमबेटका स्थल पर जाकर आंकड़ा एकत्रीकरण, चित्र एकत्रीकरण, स्थल पर मौजूद सुविधाओं, स्थल पर व्याप्त कमियों को देख कर कार्य किया गया, साथ ही द्वितीय समंकों के लिए विभिन्न पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं, समाचार पत्र, शोध-लेख एवं विभिन्न वेबसाइट का (सहारा) उपयोग किया गया है।

चित्रित शैलाश्रयों का वर्णन:-

यहां आप आदिमानव द्वारा प्रयुक्त 15 शैलाश्रयो तथा उनमें चित्रित जीवन की झलकियो को देखेंगे। शैलाश्रय क्रमांक 1 तथा 3 के उत्खनित चित्रों में प्रागैतिहासिक काल से लेकर मध्यकाल तक की पुरातात्विक स्तरीकरण के अवशेष देखे जा सकते हैं। शैलाश्रय क्रमांक 3 के पश्चिमी छोर पर एक बड़े पाषाण खंड पर कुछ प्यूपील्स है जिसे विद्वानों ने एक लाख वर्ष पूर्व मानव निर्मित आरंभिक स्थान माना है। जंतु शैलाश्रय या जंतु-रॉक के नाम से प्रसिद्ध शैलाश्रय क्रमांक 4 से 16 प्रजातियों के विभिन्न पशुओं की 252 आकृतियों का अंकन निश्चित ही जिज्ञासाओं को आकर्षित करता है। यहां से आगे की ओर (उत्तर की ओर) बेतवा नदी के विशाल जलोढ़ मैदान तथा प्राकृतिक मनोहरी छटा का आनंद लिया जा सकता सकता है। अनेक चित्रित शैलाश्रयों को देखते हुए आप शैलाश्रय क्रमांक 15 में पहुंचेंगे। यहां गेरुवे रंग में चित्रित एक विशालकाय काल्पनिक पशु को मानव का पीछा करने का अद्भुत दृश्य, आप शैलाश्रय की ऊपरी दीवार पर देख सकेंगे।

प्राकृतिक भौगोलिक संरचनाएं विभिन्न आकार की विशाल चट्टानों, अन्य अनेक चित्रित शैलाश्रयों आदि का अनुभव आप अपने प्राकृतिक परिवेश जैसे वनस्पतियों एवं जीव जंतुओं के साथ कर सकेंगे। यह सब देखते हुए आप लगभग 1400 मीटर भ्रमण करेंगे।

01 **शैलाश्रय क्रमांक** 1 :-

इस शैलाश्रय को भीमबेटका पूरा स्थल के खोजकर्ता श्री विष्णुधर वाकणकर द्वारा IIIf-23 **नाम दिया गया है। इस शैलाश्रय की ऊंचाई जमीन से 20 मीटर है जो की एक संकीर्ण था आधार पर अनिश्चितता से संतुलन बनाए हुए हैं। यहां सन 1973 से 1976 तक लगातार चार सत्रों में पुरातात्विक उत्खनन हुआ है। जिसके**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

परिणाम स्वरुप यहां अशयुलियन कॉल (15 लाख वर्ष पूर्व) के अंतिम चरण से लेकर मध्य पाषाणकाल (10000 वर्ष पूर्व) तक के अवशेष प्राप्त हुए हैं। सबसे निचली स्तर से हस्तकुठार, कुल्हाड़ी आदि पुरापाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं। इस शैलाश्रय में कुछ ही चित्र प्राप्त हुए हैं जो की ऐतिहासिक काल से संबंधित है। शैलाश्रय की छत पर बाह्यभाई रेखा में निर्मित दो हाथियों का चित्रण है जिसमें छोटे हाथी के ऊपर एक आदमी बैठा है जिसके हाथ में अंशुल, तथा दूसरे हाथ में भला है तथा कमर में तलवार बंधी है। दोनों हाथियों के दांत काफी लंबे दिखाए गए हैं।

02 शैलाश्रय क्रमांक 2 :-

इस शैलाश्रय की ऊंचाई लगभग 5 मीटर है। इसके चित्र प्राकृतिक कारणों से धुंधले पड़ गए हैं। यहां 46 आकृतियों की पहचान की गई है जिसमें मानव आकृतियां, जानवर तथा कुछ ऐसे चिन्ह भी हैं जिनकी ठीक से पहचान नहीं हो पाई है। इस शैलाश्रय का सबसे स्पष्ट चित्र एक घुड़सवार का है, जिसे दीवार के बीच में देखा जा सकता है।

03 शैलाश्रय क्रमांक 3:-

इस शैलाश्रय में बड़े पैमाने पर और कई स्टाइलिश पशु-चित्रों के कारण, इस रॉक शेल्टर को "चिड़ियाघर-रॉक" के रूप में भी जाना जाता है। इस शैलाश्रय में कुल 453 आंकड़े प्रदर्शित है जिसमें विभिन्न प्रजातियों के 252 जानवर भी शामिल है।

04 शैलाश्रय क्रमांक-4 :-

इस अर्धवृताकार शैलाश्रय की ऊंचाई 3.4 मीटर तथा आगे की तरफ का क्षेत्रफल 14 मीटर एवं 6.2 मीटर है। जिसका चिकना एवं दलवा फर्श जमीन से लगभग 3.3 मीटर ऊंचा है। इस गुफा का नामकरण डॉ वाकणकर द्वारा जू-रॉक अर्थात चिड़ियाघर रखा गया था। क्योंकि इसमें विभिन्न प्रकार के पशु पक्षियों का सजीव चित्रण मिलता है। इस शैलाश्रय में कुल 453 आकृतियां बनी है, जिनमें से 16 प्रजाति के 252 जानवरों की आकृतियों का चित्रण है। इसमें 90 मानव-कृतियों का भी अंकन है जो विभिन्न क्रियाकलापों में दर्शाये गए हैं। इसके अलावा दो गिलहरियां, एक चिड़िया (मुर्गा), छः नियोजित अलंकरण, शंख लिपि में एक अभिलेख तथा 99

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

अन्य आकृतियां बनी है। इन शैलाश्रय में आकृतियां दस स्तरों में एक के ऊपर एक बनी है। अधिकांश आकृतियां प्रागैतिहासिक काल की है तथा कुछ आकृतियों का चित्रण छठी शताब्दी ईसा पूर्व के बाद हुआ है।

05 शैलाश्रय क्रमांक- 5:-

इस शैलाश्रय में दो प्रकोष्ठ हैं जो एक पर एक है। दोनों ही प्रकोष्ठ में चित्र विद्यमान है जो की सफेद तथा लाल गेरुवे रंग के घोल से चित्रित है। ऊपरी खंड में बकरी, हिरण तथा अन्य जानवरों के चित्रण है। पेड़ पर चढ़े हुए लंगूर का बहुत ही सुंदर चित्रण यहां देखने को मिलता है।

06 शैलाश्रय क्रमांक 6:-

यह पूर्वाभिमुख आकर में बहुत ही छोटा एवं सकरा है जिसमें सफेद रंग से जानवरों का बहुत ही वास्तविक चित्रण किया गया है। यहां तीन सतहों में चित्रण किया गया है। सबसे प्रारंभिक सतह जो सबसे नीचे है, उसके चित्र धुंधले पड़ गए हैं। यह चित्र शैलाश्रय के दाएं भाग में लाल रंग में देखे जा सकते हैं।

07 शैलाश्रय क्रमांक 7:-

इस शैलाश्रय के सभी चित्र ऐतिहासिक काल से संबंधित है। इसकी छत पर एक तलवार धारी सैनिक को एक सजे हुए घोड़े के ऊपर बैठे हुए देखा जा सकता है। इसके निचले भाग में 6 घुड़सवारों का चित्रण है जिसमें तीसरा घुड़सवार अन्य सभी से आकर में बड़ा है।

08 शैलाश्रय क्रमांक 8:-

इस शैलाश्रय में एक मुख्य कक्ष है तथा पश्चिम दिशा में एक छोटा प्रकोष्ठ है। बड़ा कक्षा दो तरफ से बंद है तथा इसकी ऊंचाई भी काम है। इसकी छत पर चित्रण मिलता है जो कि समय के साथ धुंधले पढ़ चुके हैं। इसमें कवच पढ़ने सैनिकों और घुड़सवार सेना का अच्छा चित्रण देखने को मिलता है। शैलाश्रय की छत पर लाल - गेरुवे रंग तथा सफेद रंग के चित्र स्पष्ट देखे जा सकते हैं। सफेद रंग के चित्र प्राचीन है क्योंकि लाल रंग के चित्र उनके ऊपर किए गए हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

09 **शैलाश्रय क्रमांक** 9:-

इस पूर्वाभिमुख शैलाश्रय के बायी और एक छोटा एवं सकरा प्रकोष्ठ है। इस शैलाश्रय के चित्र काफी आकर्षक हैं तथा यह भीमबेटका के अन्य चित्रों से काफी अलग है। इसमें लाल व गेरुवे रंग के अलावा हरे एवं पीले रंगों में भी चित्रण किया गया है। एक गहरी सफेद पृष्ठभूमि के ऊपर गुलदस्ता, घोड़ा तथा हाथी पर सवार व्यक्ति का सुंदर चित्रण मिलता है।

10 **शैलाश्रय क्रमांक** 10:-

इस शैलाश्रय के अधिकांश चित्रों की पहचान करना कठिन है। दीवार के बायी और एक पक्षी जो संभवत मोर है, का चित्रण काफी स्पष्ट है। इसके अलावा एक तलवार धारी, एक हिरण तथा बजाते हुए व नाचते व्यक्तियों का चित्रण भी किया गया है यह सभी सफेद रंग से रंगे हुए हैं।

11 **शैलाश्रय क्रमांक** 11:-

इस शैलाश्रय में ऐतिहासिक काल से संबंधित चित्र बने हैं। यहां के चित्र मुख्यतः सफेद रंग के हैं। कुछ चित्रों में लाल रंग की बाह्य रेखा भी दी गई है। घुड़सवारों व पैदल सैनिकों के समूह देखे जा सकते हैं।

12 **शैलाश्रय क्रमांक** 12:-

इस शैलाश्रय में विभिन्न प्रकार के जानवरों का चित्रण किया गया है। एक तरफ बड़ी सींग वाली भैंसों का चित्र तथा दायी और दौड़ते हुए नीलगायों को देखा जा सकता है। एक ऊर्ध्वाधर पंक्ति में चार भागते हुए शीतलों का बहुत ही दिलचस्प चित्रण किया गया है, जैसे कि वह ऊंची चट्टान से नीचे की ओर कूद रहे हो। यहां चित्रकार ने चित्रों की पृष्ठभूमि के रूप में चट्टान की विशेष आकृति का उपयोग किया, ताकि जानवरों के क्रियाकलाप अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त हो सके।

13 **शैलाश्रय क्रमांक** 13:-

इस शैलाश्रय में चित्रकारी काफी ऊंची जगह पर की गई है। यहां वराह (सूअर) की दो आकृतियों को छत में स्थित दो अलग-अलग खोह में चित्रित किया गया है। पहली आकृति शैलाश्रय क्रमांक 15 **पर चित्रित सुप्रसिद्ध**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

काल्पनिक वराह (सूअर) की आकृति से काफी सामानता रखती है। सुअरों के अन्य झुंड का चित्रण निचले भाग में भी किया गया है। यह एक शिकार का दृश्य है जिसमें पांच से छः आदमियों को भी चित्रित किया गया है। सूअर के शरीर में ज्यामितीय अलंकरण बने हैं। इस शैलाश्रय के पीछे सुप्रसिद्ध वराह शैलाश्रय स्थित है।

14 **शैलाश्रय क्रमांक** 14:-

इस शैलाश्रय की ऊंचाई लगभग 6 मीटर है। एक मरे हुए सूअर को पकड़ कर ले जाने का दृश्य बहुत ही सुंदरता से चित्रित किया गया है। यह संपूर्ण दृश्य सफेद रंग से चित्रित है। यहां 11 आदमियों के दल को शिकार करते हुए दिखाया गया है। इन्होंने अपने हाथ में धनुष तथा बाण पकड़ा हुआ है। सिंदूरी रंग से चित्रित दृश्य में हाथी सवार एक अधुरे जानवर की छवि तथा सफेद रंग में तीन भैसो के चित्र देखे जा सकते हैं। तथा शरीर को मधुमक्खी के छत्तों वाले विन्यास से सजाया गया है।

15 **शैलाश्रय क्रमांक** 15:-

यह शैलाश्रय देखने में छत्रक (मशरूम) की आकृति का लगता है जो की मुख्य रूप से एक विशालकाय वराह (जंगली सुअर) की आकृति के कारण प्रसिद्ध है, जिसका चित्रण जमीन से 9.85 मीटर की ऊंचाई पर हुआ है। इस विशालकाय जानवर के दो सींग तथा एक बड़ी नाक हैं जिसकी समग्र आकृति से अनुमान लगाया जा सकता है कि यह एक काल्पनिक पशु है। नाक के पास एक मानव आकृति है तथा सामने की ओर एक केकड़ा बना है। इसके पिछले पैर के पास एक भैसे की आकृति भी बनी है जिसका मुंह दूसरी तरफ है। इसके अलावा यहां पर मानव व पशुओं की आकृतियां आकृतियां है। पशु आकृतियों में गाय, गेंडा, लंगूर आदि की आकृतियां प्रमुख है।

पर्यटन के रूप में:-

भीमबेटका एक पूरापाषाणिक आवासीय पुरास्थल है। यह आदिमानव द्वारा बनाए गए शैलचित्रों और शैलाश्रयो के लिए प्रसिद्ध है। इन चित्रों को पुरापाषाण काल से मध्यपाषाण काल के समय का माना जाता है। यह चित्र भारतीय उपमहाद्वीप में मानव जीवन के प्राचीनतम चिन्ह है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

भीमबेटका क्षेत्र को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण भोपाल मंडल ने अगस्त 1990 में राष्ट्रीय महत्व का स्थल घोषित किया तथा जुलाई 2003 में यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया।

पुरापाषाण काल से मध्य पाषाणकाल तक का इतिहास संजोये हुए उक्त स्थल, जो प्रदेश की राजधानी के निकट होते हुए, राष्ट्रीय महत्व के साथ विश्व धरोहर होने से साथ ही पर्यटन के दृष्टिकोण से वर्तमान तक पिछड़े अवस्था में देखा जा रहा है। स्थल को जो प्रसिद्धि मिलनी चाहिए थी अभी तक (नहीं मिली) पिछड़ी अवस्था में है। इसी कारण यहां पर्यटन का विकास नहीं हो पाया है। कुछ पर्यटक जो ऐतिहासिक वह भौगोलिक तत्वों में रुचि रखते हैं वही देखे जाते हैं।

उक्त स्थल पर कुछ जमीनी सुविधावो का प्रावधान कर दिया जाए तो निश्चित ही विगत भविष्य में पर्यटन का मुख्य स्थल हो सकता है। जिससे मध्य प्रदेश शासन के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था में भी उचित भागीदारी हो सकती है। यह प्रदेश के राजकीय कोष में वृद्धि का कारण बन जाएगा।

स्थल पर व्याप्त समस्याएं:-

स्थल का प्रत्यक्ष रूप भ्रमण करने के पश्चात पाई गई समस्याएं अधोलिखित हैं।

1-पीने के पानी की उचित व्यवस्था का अभाव।

2- खान-पान की कोई व्यवस्था नहीं है।

3- जंगली जीव-जंतुओं का भय (खासकर सांप एवं बंदरों से खतरा) यदि मह अपने साथ कोई खाद्यान्न पदार्थ खुले हाथों में रखे तो बंदरों द्वारा छीन लिया जाता है।

4- सुरक्षा गार्ड की कमी।

5- स्थल के चारों ओर बाउंड्री वालों का ना होना (जंगली जानवरों का आसानी से स्थल पर आना-जाना होता रहता है।)

6- शौचालय की समस्या (विशेषतः महिला वर्ग के लिए।)

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

7- गाइड की कोई सुविधा नहीं

8- राष्ट्रीय राजमार्ग 69 से भीमबेटका स्थल के बीच की दूरी 3 किलोमीटर है। उक्त 3 किलोमीटर मार्ग कच्चा, पथरीला एवं सकडा होने से आवागमन की समस्या। सकडे मार्ग पर दो बड़े वाहन (कार) आसानी से आमने-सामने नहीं निकाल सकते।

सुझाव:-

भीमबेटका ऐतिहासिक एवं भौगोलिक दृष्टिकोण से विश्व प्रसिद्ध है। परंतु पर्यटन के रूप में जो चाहिए, वह नहीं है। कुछ बुनियादी सुविधाओं की आवश्यकता विश्व प्रसिद्ध पर्यटन के रूप में उभर सकता है भीमबेटका। प्रस्तुत सुझाव अधोलिखित है।

1- राष्ट्रीय राजमार्ग से भीमबेटका स्थल तक जाने वाले मार्ग का चौड़ीकरण कर दूरस्तीकरण किया जाए ।

2- स्थल के चारों ओर एक जालीदार बाउंड्री बनाई जाए ।

3- शासन द्वारा टूरिस्ट गाइडो की नियुक्ति की जाए ।

4- सुरक्षा गार्ड्स की नियुक्ति शासन द्वारा की जाए ।

5- उचित आहार एवं पीने के पानी की सुविधा निर्मित की जाए।

6- जगह-जगह शौचालयो का निर्माण किया जाए ।

7- स्थल पर आने-जाने की समय सारणी निश्चित की जाए ।

8- स्थल का उचित ढंग से प्रचार- प्रसार किया जाए।

निष्कर्ष:-

उक्त शोध पत्र लेखन से भीमबेटका की भौगोलिक दशाओं एवं ऐतिहासिक पक्षों का विवरण जानने का अवसर प्राप्त होता है। भीमबेटका के भ्रमण में यहां की गुफाओं के 600 शैलाश्रय देखे जा सकते हैं, जिनमें से 275

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शैलाश्रय चित्रों द्वारा सुसज्जित है। यहां की गुफाओं की चित्रकला लगभग 30000 वर्ष पुरानी है। भ्रमण के दौरान यहां कुछ कमियां देखी जा सकती हैं, जैसे सुरक्षा कर्मी की संख्या में कमी, जंगली जीव-जंतु व पशु से खतरा, उचित बैठक व्यवस्था एवं पेयजल की कमी। भ्रमण के दौरान अपने साथ खाद्य सामग्री एवं पानी न रखें तो इस स्थिति में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है साथ ही वाहन चालक की लापरवाही बड़ी दुर्घटना को जन्म दे सकती है आदि।

भीमबेटका प्राचीन एवं ऐतिहासिक पर्यटन स्थल होने के बावजूद प्रसिद्धि के लिए तरस रहा है। शासन के द्वारा यदि यहां पाई जाने वाली छोटी-छोटी कर्मियों को दूर कर दिया जाये तो इसकी लोकप्रियता और अधिक बढ़ जाएगी।

भीमबेटका की लोकप्रियता बढ़ने से विदेशी एवं क्षेत्रीय पर्यटकों का आगमन अधिक हो जाएगा, जिसके परिणाम स्वरुप देश व प्रदेश की आर्थिक स्थिति में सकारात्मक प्रभाव होगा।

संदर्भ सूची:-

1. Tourism Development Principal &Practices - A.K.Bhatia.
2. bhopaldivision MP.nic.in.
3. https:/hi.m.wikipedia.org.
4. टूरिज्म इन इंडिया- हिस्ट्री एंड डेवलपमेंट प्रकाशन-भाटिया ए.के.।
5. शाह अशोक,पुरातत्व, अभिलेखागार एवं संग्रहालय भोपाल, भोपाल- इतिहास पुरातत्व संस्कृति एवं पर्यटन- 2010.
6. तिवारी विनय कुमार- दर्शनीय मध्य प्रदेश, Lyall Book Depot Book Sellers Library Suppliers, Sultania Road Bhopal.
7. श्रीवास्तव श्रीवास्तव पी.एन.- मध्य प्रदेश जिला गजेटियर, गजेटियर संचालनालय संस्कृति विभाग, मध्य प्रदेश भोपाल- 1991.